कार्यालय जिला पंचायत (ग्रामीण विकास) छिंदवाड़ा (म.प्र.)

सफलता की कहानी

सार्वजनिक कूप बुझा रहा ग्रामीणों की प्यास

वृक्षारोपण की हो रही सिंचाई, मिला ग्रामीणों को रोजगार

रोजगार गारंटी योजना से हुए अनेक फायदें

राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना–म.प्र. की उपयोजनाएं सौंसर विकासखंड की ग्राम पचांयत रामपेठ में कारगर साबित हुई है। कपिलधारा उपयोजना में बना सार्वजनिक कूप जहां ग्रामीणों की प्यास बुझा रहा है, वहीं पहाड़ी पर हुआ वृक्षारोपण भी सफल साबित हुआ है। वृक्षारोपण की सिंचाई भी इसी सार्वजनिक कूप से हो रही है। उक्त दोनों कार्यों से ग्रामीण मजदूरों को गांव में ही रोजगार के अवसर भी उपलब्ध हुए है।

सचिव श्री संजय गोमकाले ने बताया कि वर्ष 2007–08 में रोजगार गारंटी योजना के अंतर्गत शासकीय भूमि पर सार्वजनिक कूप निर्माण का कार्य कराया गया। लगभग 35 फीट गहरे कुंए के निर्माण में एक लाख 85 हजार 415 रूपए लागत लगी। 69 रूपए टास्क रेट पर काम कराया गया, जिसके तहत ग्रामीण मजदूरों को रोजगार प्राप्त हुआ। गर्मी के दिनों में भी कुंए में लबालब पानी भरा हुआ था।

सरपंच श्री देवाजी तुमड़ाम ने बताया कि गर्मी के दिनों में बिजली कटौती और अन्य कारणों से गांव में संचालित नल–जल योजना बंद पड़ी थी। गांव में पीने के पानी का और कोई स्रोत नहीं था। ग्रामीणों को दूर–दूर से पानी लाना पड़ता था, लेकिन इस सार्वजनिक कूप के बनने से ग्रामीणों को गर्मी के दिनों में काफी राहत मिली। करीब 1500 की आबादी वाले इस गांव की प्यास इसी इकलौते कुंए ने बुझाई। ग्रामीण विजय सहारे ने बताया कि अभी भी ग्रामीण इस कुंए से पानी ले जाते है। यह कुआं ग्रामीणों के लिए काफी उपयोगी साबित हुआ है।

▪ सफल रहा रोजगार गारंटी योजना का वृक्षारोपण

ग्राम पंचायत रामपेठ में इसी सार्वजनिक कूप के पास तिकाड़ी बाबा वाली टेकड़ी पर वर्ष 2007–08 में वृक्षारोपण का कार्य भी किया गया है। सचिव श्री गोमकाले ने बताया कि लगभग 3 हेक्टेयर में पौधरोपण कार्य किया गया है। जाम, आवंला, जामुन, सागौन, गुलमुहर, बांस, चिरोंजी आदि के लगभग एक हजार पौधे लगाए गए है। लगभग सभी पौधे अच्छी तरह पनप गए है। सार्वजनिक कूप से पौधों की नियमित सिंचाई हो रही है। ग्राम पंचायत ने पौधों की देखरेख के लिए टास्क रेट 91 रूपए से एक मजदूर भी रखा गया है। पौधरोपण के चारों पौधों की सुरक्षा की दृष्टि से सीपीटी का कार्य भी करा दिया गया है, साथ ही बागड़ भी बनाई गई है।

पौधों की देखरेख करने वाले मजदूर गुलाब आवारी ने बताया कि मात्र 15–20 पौधे ही नहीं पनप पाए, इसके अलावा सभी पौधे जीवित है और अच्छी तहत फलफूल रहे है। पौधों को सुबह–शाम पानी देते है। इसी जगह एक झोपड़ी बना ली है, ताकि यहीं रहकर पौधों की देखरेख की जा सकें। गुलाब पिछले दो माह से पौधों की देखरेख कर रहे है।